Raga of the Month February 2023 Raga Suranjani राग सुरंजनी

राग सुरंजनी यह एक अप्रचलित राग है। अभिनव गीत मंजरी के तीसरे भागमे इस रागका संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। कर्नाटक संगीतके सूर्यकांता इस मेलकर्तासे यह राग उत्पन्न हुआ है। रागमे रिषभ कोमल और बाकी स्वर शुद्ध है। इस रागका सृजन आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। यह राग भैरव और मांडके संयोगसे बना है। यह राग सम्पूर्ण है, उसका वादी मध्यम और संवादी षड्ज है। आरोह और अवरोहमे मध्यम तथा धैवतकी संगति बीच बीचमे दिखाई जाती है। यह राग दिनके प्रथम प्रहरमे गाया जाता है।

रागका उठाव - सा, रे̱ ग म प, ग रे̱, सा , रे̱ ग, म , ग म प, ध प म , प म , (म)रे̱ , (ग)रे̱, सा

किताबमे दिया हुआ स्वर विस्तार नीचे दिया हुआ है।

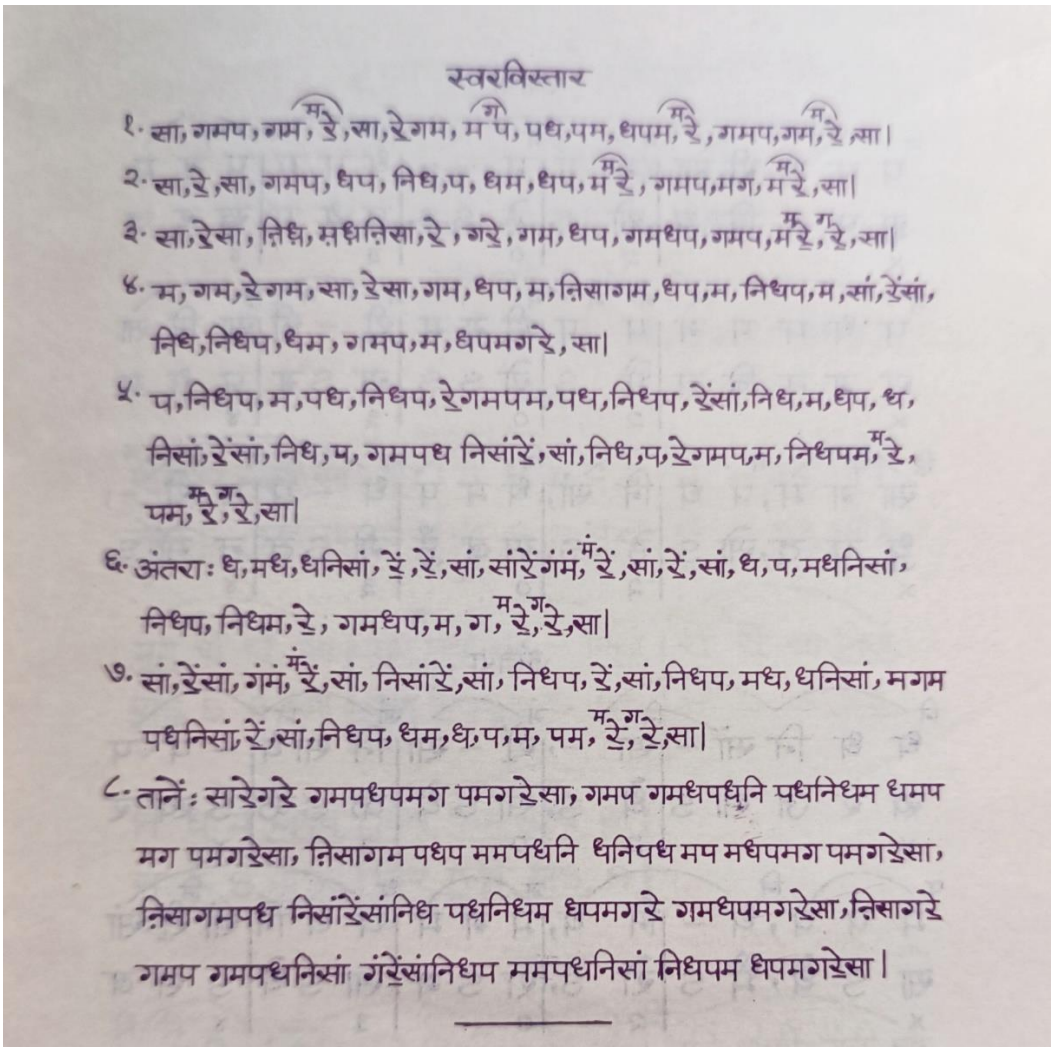

स्वरविस्तार

१. सा, गमप, गम, (म)रे̱, सा, रे̱गम, (ग)म प, पध, पम, धपम, (म)रे̱, गमप, गम, (म)रे̱, सा।

२. सा, रे̱, सा, गमप, धप, निध, प, धम, धप, म (म)रे̱, गमप, मग, म (म)रे̱, सा।

३. सा, रे̱सा, ऩिध़, म़ध़ऩिसा, रे̱, गरे̱, गम, धप, गमधप, गमप, म (म)रे̱, (ग)रे̱, सा।

४. म, गम, रे̱गम, सा, रे̱सा, गम, धप, म, ऩिसागम, धप, म, निधप, म, सां, रे̱ंसां, निध, निधप, धम, गमप, म, धपमगरे̱, सा।

५. प, निधप, म, पध, निधप, रे̱गमपम, पध, निधप, रे̱ंसां, निध, म, धप, ध, निसां, रे̱ंसां, निध, म, गमपध निसांरे̱ं, सां, निध, प, रे̱गमप, म, निधपम, (म)रे̱, पम, (म)रे̱, (ग)रे̱, सा।

६. अंतरा: ध, मध, धनिसां, रे̱ं, रे̱ं, सां, सांरे̱ंगंमं, (मं)रे̱ं, सां, रे̱ं, सां, ध, प, मधनिसां, निधप, निधम, रे̱, गमधप, म, ग, (म)रे̱, (ग)रे̱, सा।

७. सां, रे̱ंसां, गंमं, (मं)रे̱ं, सां, निसांरे̱ं, सां, निधप, रे̱ं, सां, निधप, मध, धनिसां, मगम पधनिसां, रे̱ं, सां, निधप, धम, ध, प, म, पम, (म)रे̱, (ग)रे̱, सा।

८. तानें: सारे̱गरे̱ गमपधपमग पमगरे̱सा, गमप गमधपधनि पधनिधम धमप मग पमगरे̱सा, ऩिसागम पधप ममपधनि धनिपध मप मधपमग पमगरे̱सा, ऩिसागमपध निसांरे̱ंसांनिध पधनिधम धपमगरे̱ गमधपमगरे̱सा, ऩिसागरे̱ गमप गमपधनिसां गंरे̱ंसांनिधप ममपधनिसां निधपम धपमगरे̱सा।

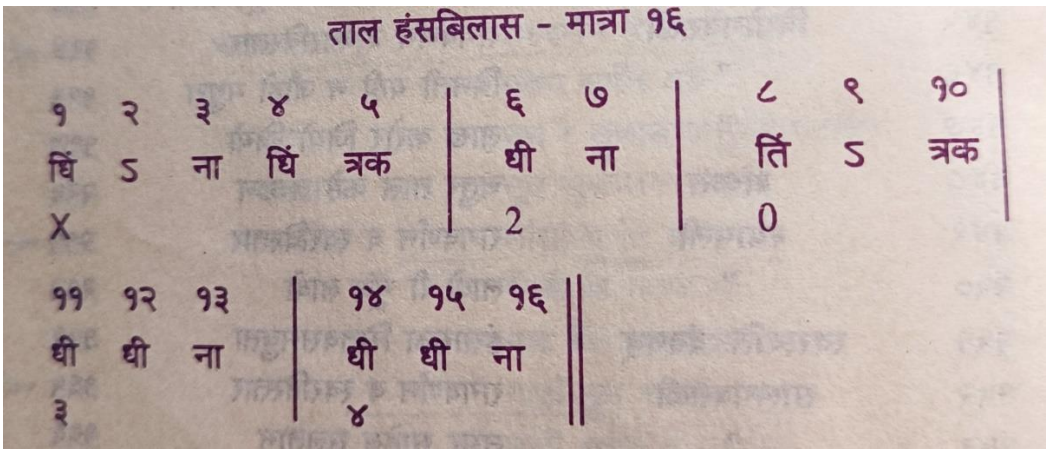

ताल हंसबिलास - मात्रा १६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धिं	ऽ	ना	धिं	त्रक	धी	ना	तिं	ऽ	त्रक
X					2		0		

११	१२	१३	१४	१५	१६
धी	धी	ना	धी	धी	ना
३			४		

आजके ऑडियोमें हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित विलम्बित और द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजीने गायी हुई है। द्रुत रचना हंसबिलास तालमे निबद्ध है, जिसका सृजन आचार्य रातंजनकरजीने किया है। इस तालका विवरण एक तालिकामे दिया हुआ है।

संदर्भ : "अभिनव गीत मंजरी" भाग ३.
आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले, श्री अजय गिंडे.

१-२-२०२३

Link to the list of 140^{+} Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx